चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका • 258 • मार्च 2008

दोस्तो,

इन दिनों तुम परीक्षा में लगे होगे। कभी सुबह-शाम ज़रा बाहर निकल कर देखो। पेड़-पौधे रंगों से कैसे तरबतर हुए जा रहे हैं। कई पेड़ तो इतने फूले हैं कि उनकी डालियाँ तक नज़र नहीं आती हैं। जैसे कई पेड़ों के फूल गलती से एक ही पेड़ में आ गए हैं। हाँ, अगला अंक चाँद पर केन्द्रित होगा।

सुशील शुक्ल

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सम्पादकीय सलाहकार
रैक्स डी रोज़ारियो
तेजी ग्रोवर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
अतनु राय
डिजिटल एक्सप्रेशन्स

वितरण
अनिल लोखण्डे
कमल सिंह

सहयोग
कविता तिवारी
कार्तिक शर्मा
कमलेश यादव

सदस्यता शुल्क
एक प्रति - 15.00
वार्षिक - 150.00
दो साल - 275.00
तीन साल - 400.00
आजीवन - 1500.00

सभी डाक खर्च हम देंगे। चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 46 2016
फोनः (0755) 267 1017, 255 0976, 6549033
फैक्सः (0755) 246 1703
chakmak@eklavya.in
www.eklavya.in

इस अंक में...

3 मीठी चीनी
4 गूपी गाइन बाघा बाइन
7 "त" से शुरू होने वाली चीज़ें
8 वे सिर्फ एक पर्वतारोही नहीं थे
9 डार्विन, चन्द परिन्दे और...
12 शो खत्म
14 हाथ की सफाई उर्फ...
16 जब अकबर बादशाह की मौत हुई
19 कविताएँ
20 तुम भी बनाओ - कौआ
22 डाक्टर चींचूं के चमत्कार
24 नाटक - जयगान
29 चित्र पहेली
30 बसन्त के मेले में पांगर, ततैया और छोटा बसन्ता
32 मेरा पन्ना
35 माथापच्ची/उलझन
36 हरे घास की छप्पर वाली झोपड़ी
40 मेरी डायरी के कुछ पन्ने

आवरण डिज़ाइनः अतनु राय, फोटोः *चाइल्डहुड इन इंडिया*, युनिसेफ से साभार

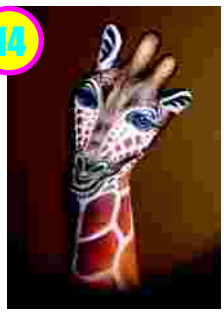

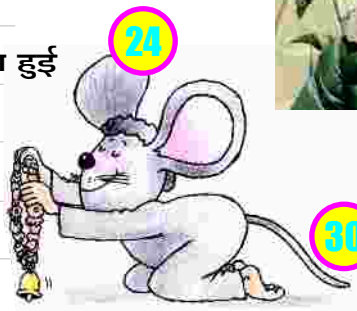

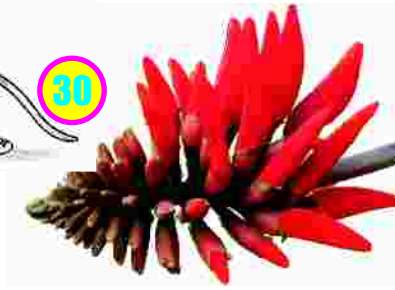

14

9

8

24

30

32

4

20

22

40